A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

तबला में बाँट

Dr. Sandhya Yadav[1], Dr. Hariomm Hari[2]

1 Department of Music, D S B Campus, Kumaun University Nainital
2 Department of Percussion, Faculty of Music, Indira Kala Sangit vishwavidyalaya, Khairagarh

OPEN ACCESS

सारांश

तबले के प्रत्येक घराने की भिन्न-भिन्न वादन शैली, खुशबू, अंदाज़, भाषा-वाणी इत्यादि होती है, यही भिन्नता प्रत्येक घराने का वादन वैशिष्ट्य बन जाता है, जो अन्य घराने से प्रत्येक घराने को भिन्न बनाता है। इन वादन वैशिष्ट्य के दो प्रमुख बिन्दु है-1. वादन शैली एवं 2. बंदिश । तबले के प्रमुख छः घरानों में से एक बनारस घराना अपनी यही भिन्न वादन-शैली, खुशबू, अंदाज़, भाषा-वाणी एवं यहाँ की सुंदर रचनाएं अर्थात् बंदिश। तबले के सभी घरानों के भांति बनारस घराने में भी एकल तबला वादन में विभिन्न बंदिशों को प्रस्तुत किया जाता है जैसे- उठान, चलन-चारी, बाँट, क़ायदा, रेल, रौ, गत, फर्द, टुकड़ा, परन, चक्रदार इत्यादि। बाँट इस घराने की प्रमुख पहचान है जिसका वादन मात्र बनारस घराने की वादन शैली में ही किया जाता है। अन्य घराने के तबला वादक भी अगर इसका वादन करते भी हैं तो इसमें कोई संदेह नहीं कि वह पूर्ण रूप से बनारस घराने से प्रभावित होकर ही बाँट का वादन अपने तबला वादन में करते हैं। इस रचना की खासियत है इसमें प्रयुक्त विशिष्ट अंग का बाँया। जिसे बनारस में बाँए का घुलाना कहा जाता है, जिसे आसानी से सुनकर अन्य शैली से पृथक पहचाना जा सकता है।

सूचकांक शब्द- *बाँट, बनारस घराना, वादन शैली, स्वतंत्र बाँट, प्रबंध बाँट।*

भूमिका

कोई भी रचना जब अपने विकास के दौरान किसी खास जगह में पहुँचती है तो आवश्यकता पड़ने पर वहाँ की सांगीतिक जरूरत के अनुरूप एक नई रचना का रूप धारण कर लेती है। संभवतः यही घटना क़ायदे के सफर में दिल्ली से लखनऊ होते हुए बनारस पहुँचने पर हुई होगी। खास तौर पर विभिन्न अवनद्ध वाद्यों तबला, पखावज के साथ-साथ दुक्कड़, नक्कारा, ढोलक, ताशा इत्यादि के बाँये एवं दाँये के विभिन्न अंगों से प्रेरित होकर क़ायदे के लक्षण से पृथक विभिन्न भाव एवं रस की उत्पत्ति करने में समर्थ एक विशिष्ट रचना **'बाँट'** का प्रादुर्भाव हुआ होगा। क़ायदे में निहित सभी विशेषताओं को धारण करने के पश्चात् बाँट में अन्य कई विशेष गुण विद्यमान हैं। बनारस जहाँ लोक एवं शास्त्र समरूप भाव से प्रतिष्ठा पाता है। इसका सुंदर उदाहरण इस रचना में प्रयुक्त तालशास्त्र के विभिन्न तत्त्वों लय, लयकारियां एवं विशिष्ट छंदों को आत्मसात करता है वहीं इसमें बाँए से उत्पन्न सौन्दर्य में लोक वाद्यों के देशज उमंग एवं आनंद के प्रभाव की अनुभूति कराता है। यह रचना ताल-छंद के विविध सूक्ष्म तत्त्वों एवं देशज वाद्यों की विशेषता का सुंदर समन्वय का परिणाम है। फलस्वरूप यह रचना तबला एकल वादन के साथ गायन, वादन एवं नृत्य के साथ संगत में उपयुक्त सिद्ध हुई। विशेषतौर पर ठुमरी, दादरा इत्यादि विधाओं में प्रयुक्त लग्गी-लड़ी के निर्मिती में भी बाँट अत्यंत उपयोगी है।

संगीत के विद्वानों ने 'बाँट' के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए हैं जो निम्नलिखित हैं-

- बाँट के संबंध में मधुकर गणेश गोडबोले जी लिखते हैं, "लग्गी में प्रयुक्त होने वाले बोलों के विधि विस्तार को बाँट या लय बाँट कहते हैं। यूं तो क़ायदे के विस्तार को भी कुछ लोग बाँट कहते हैं किन्तु सुविधा व स्पष्टता की दृष्टि से क़ायदे के विस्तार को पल्टा एवं लग्गी के विस्तार को बाँट कहना उपयुक्त होगा। लग्गी के बोलों को उलट-पलट कर बाँट बनाते हैं।"[1]
- पं० सुधीर माईणकर के अनुसार, "लग्गी के पल्टों को बाँट कहते हैं। लग्गी में बहुत ही कम अक्षरों का अंतर्भाव होने से उसके पल्टे याने शब्द उलट-पलट फिराकर प्रस्तुत किये जाते हैं, इस क्रिया को बाँट कहते हैं। बाँट की संकल्पना में भरी-खाली के तत्व का प्रभाव ढंग से मुक्त प्रयोग किया जाता है।"[2]
- बाँट के संबंध में डॉ० आबान ई० मिस्त्री अपनी पुस्तक 'तबले की बंदिशें' में लिखती हैं कि "बाँट का शाब्दिक अर्थ है किसी वस्तु को विभाजित करना। उल्लेखनीय है कि क़ायदे या पेशकार आदि के विस्तार को पल्टा कहते हैं। इसी प्रकार किसी लग्गी के विस्तार को बाँट कहते हैं। लग्गी का विस्तार गायन-वादन की चलन पर निर्भर करता है।"[3]

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

- पं० गिरीशचंद्र श्रीवास्तव के मतानुसार, "बाँट का शाब्दिक अर्थ है बांटना या विभाजित करना। दादरा, कहरवा आदि चंचल प्रकृति की तालों में प्रयुक्त लग्गी को विविध प्रकार से सुन्दरतापूर्वक विस्तारित करने को बाँट कहते हैं। जिस प्रकार पल्टा से क़ायदा, पेशकार या रेला के विस्तार का किस्म या प्रकार से ताल के ठेके के पल्टे का आभास मिलता है। उसी प्रकार बाँट से लग्गी के विस्तार का संकेत मिलता है। लग्गी के समान बाँट में भी चंचलता और शृंगार रस का निष्पादन होना चाहिए। बाँट में भरी-खाली के पल्टे होते है। उल्लेखनीय है कि बनारस घराने के तबला वादकों में बाँट के प्रति भिन्न अवधारणा है वे इसे लग्गी का विस्तार न मानकर स्वतंत्र रूप से बजाते हैं।"[4]
- Bant-A composition performed in the Benaras Garana improvisied in a similer manner to the Kaida. The bol formation of the Bant are more repetitious the those of me kaida as they are visually performed with the lighter tala. The phrases of the bant are derived forms the accompaniment patterns of the semi classical forms, tumri and gazal.[5]

उपर्युक्त परिभाषा में बाँट का संबंध सुगम संगीत में प्रयुक्त की जाने वाली तालें कहरवा एवं दादरा ताल में प्रयुक्त लग्गी के विस्तार से बताया गया है। संगीत की ऐसी बहुत सी पुस्तकें एवं कलाकार हैं जो बाँट रचना का संबंध कहरवा एवं दादरा ताल में प्रयुक्त लग्गी के विस्तार के संबंध में परिभाषित करते हैं। ध्यानपूर्वक सूक्ष्मता से बाँट के विभिन्न तत्त्वों को जाने बगैर उपरोक्त बातें अपूर्ण एवं निराधार प्रतीत होती हैं। संगीत कला में यदा-कदा ऐसा दिखता है कि जब कला साधक या लेखक रचनाओं को व्यावहारिक तौर पर प्रयोग किए बगैर पूर्वाग्रह से प्रभावित होकर अपना विचार व्यक्त करते हैं तो यह विचार कला के यथार्थ रूप को समझने में सहायक सिद्ध न हो कर भ्रामक एवं अनुपयुक्त हो जाता है। बनारस घराने में बाँट एक बहुत ही खास रचना मानी जाती है। अतः बाँट के संदर्भ में अन्य कुछ ऐसे विद्वानों के भी मत प्राप्त होते हैं, जिनके कथ्य से बाँट अधिक स्पष्ट हो पाती है जो कि निम्नलिखित है-

> पं० छोटेलाल मिश्र अपनी पुस्तक 'ताल-प्रबंध' में बाँट के संदर्भ में उक्त तथ्यों को स्पष्ट करते हुए लिखते है, "आज तक की उपलब्ध पुस्तकों में लग्गी के विस्तार को बाँट की संज्ञा दी गई है। हो सकता है कि यह परिभाषा अन्य घरानों के लिए ठीक हो। बनारस घराने में विशेष रूप से बाँट बजाने की प्रथा चली आ रही है। यहाँ पर स्वतंत्र रूप से बाँट अधिक बजाई जाती है और बाँट का विस्तार क्रम क़ायदा जैसा ही रहता है। यहाँ बाँट विशेषतः ऐसी होती है, जिसके अंतिम भाग का विस्तार किया जाता है तो वह लग्गी बन जाती है। अतः बाँट के विस्तार को लग्गी कह सकते है ना कि लग्गी के विस्तार को बाँट।"[6]

बनारस घराने में बाँट का विशेष एवं सुंदर प्रयोग मिलता है। यह रचना बनारस घराने की प्रमुख विशेषतायुक्त रचना है। 'बाँट' क़ायदा की तरह ही एक विस्तारशील रचना है जिसका विस्तार करते हुए दो हिस्से में बांटा जा सके एवं दूसरे हिस्से से लग्गी का निर्माण हो ऐसी रचना बाँट कहलाती है। बाँट क़ायदे की तरह ही एक रचना है अर्थात्त क़ायदे का एक विशिष्ट प्रकार को ही बाँट कहा गया है। बस दोनों में फ़र्क यह है क़ायदा के विस्तार में यह आवश्यक नहीं है कि उसका एक हिस्सा लग्गी का निर्माण कर सके। "बाँट रचना का यह एक महत्त्वपूर्ण गुण है कि वो हमेशा दो ही हिस्से में बँट जाती है एवं दो हिस्से में बंटने के बाद एक हिस्सा लग्गी बन जाती है।"

बाँट बनारस घराने की महत्त्वपूर्ण एवं लोकप्रिय रचना है, बनारस में बाँट की निर्मिति का कारण ठुमरी गायन शैली का परिवेश एवं उसमें तबला संगति के समय लग्गी बजाने की आवश्यकता महसूस करने के कारण हुई। बनारस में ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी इत्यादि अनेक विधाओं की गायन शैली प्रचलित है एवं इसका प्रभाव तबले पर हुआ है। बनारस में बाँट की निर्मिति का सबसे महत्वपूर्ण कारण यही है।

बनारस घराने की एक विस्तारशील रचना जिसके आधे हिस्से में लग्गी छुपी हो। इसे स्वतंत्र तबला वादन एवं संगत दोनों में बजाया जाता है। उदाहरण-

धीग	धीना	तिरकिट	धीना
धागे	नाधी	गती	नाड़ा
तीक	तीना	तिरकिट	तीना
धागे	नाधी	गधी	नाड़ा

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

बाँट, क़ायदे के समान बनारस घराने की एक विस्तारशील रचना है। बनारस के बाहर बाँट बानगी के रूप में प्रयोग हो सकती है, परंतु बनारस की तरह इसका विस्तार और वृहद स्वरूप दुर्लभ प्रतीत होते हैं।

क़ायदा, लग्गी या स्वतंत्र रचना के रूप में 'बाँट'

बनारस में क़ायदे की तरह बाँट का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व है, बनारस में क़ायदे भी होते हैं। बनारस घराने की एक विशेष रचना बाँट जो क़ायदे के सदृश्य से होते हुए भी क़ायदे से अत्यंत भिन्न होती हैं। बाँट सिर्फ बनारस घराने में बजाने का प्रचलन है अन्यत्र इसका प्रयोग नहीं है। बनारस में बाँट का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व है। सामान्यतया बाँट की अनूठी विशेषता जो इसे क़ायदे से अलग करती है। इसके विस्तार का ढंग भी अत्यंत आकर्षक है। सामान्यतया बाँट के हिस्से में एक लग्गी प्रकार सम्मिलित रहता है, इसका मतलब यह नहीं है कि बाँट किसी लग्गी से ही निर्मित हुआ हो जबकि यह तथ्य ज्यादा प्रमाणित है कि लग्गी की निर्मित किसी बाँट से हुई हो। उदाहरण स्वरूप- 'धीग धीना तिरकिट धीना' बाँट में पहले अर्धभाग में लग्गी का स्वरूप नहीं है लेकिन इसके दूसरे अर्धभाग में एक स्वतंत्र रूप से लग्गी का स्वरूप दिखता है।

धीग	धीना	तिरकिट	धीना	
(धागे	नाधी	गती	नाड़ा)	लग्गी
तीग	तीना	तिरकिट	तीना	
(धागे	नाधी	गधी	नाड़ा)	लग्गी

एक और उदाहरण प्रचलित बाँट का दिया जा रहा है, जिसके दूसरे अर्धभाग में लग्गी निर्मित हुई है -

धाड़	धाधे	तेटे	धाड़	
(धाड़	धाति	नती	नाड़)	लग्गी
ताड़	ताते	तेटे	ताड़	
(धाड़	धाधि	नधी	नाड़)	लग्गी

बाँट पर अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि पं० छोटेलाल मिश्र ने बाँट के दो प्रकार बताए हैं-

स्वतंत्र बाँट-

अत्यंत प्रचलित बाँट है, जिसे स्वतंत्र बाँट कहते हैं। इसकी प्रस्तुति बिल्कुल क़ायदे के समान की जा सकती हैं। इसके वादन में इसका ठाह, दुगुन और चौगुन करने का रिवाज है और बाँट का विस्तार क़ायदे की तरह ही किया जाता है। इसके अलावा बनारस घराने में एक और खास प्रकार की बाँट होती है जिसमें लयकारी का प्रयोग कर विभिन्न लयों में इसे बजाया जाता है। उदाहरण- पं० अनोखेलाल मिश्र द्वारा रचित स्वतंत्र बाँट-

रचना- स्वतंत्र बाँट

रचनाकार- पं० अनोखेलाल मिश्र

धाड़ाघेघे	नगधिन	गिनधिन	धाड़ागिन
धिनगिन	धाड़ाघेघे	नकतिन	ताड़ाकिन
ताड़ाकेके	नकतिन	किनतिन	ताड़ाकिन
धिनगिन	धाड़ाघेघे	नकधिन	धाड़ागिन

प्रबंध बाँट -

इस प्रकार के बाँट को क़ायदे की तरह ही बरता जाता है लेकिन इसका प्रयोग रेला बजाने के लिए जमीन बनाने अथवा छंद निर्मिति के रूप में भी होता है। इस बाँट के ऊपर बजने वाले रेले को सुनकर बाँट के स्वरूप का आभास निरंतर बना रहता है। उदाहरण-

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

रचना- प्रबंध बाँट

धा	ड़	धा	ति
न	ति	ना	ड़
ता	ड़	धा	धि
न	धि	ना	ड़

बाँट से निर्मित रेला

धा	तिरकिट	तक	तिन
तक	तिन	ता	तिरकिट
ता	तिरकिट	तक	धिन
तक	धिन	धा	तिरकिट

बाँट के महत्वपूर्ण लक्षण एवं गुण

- बाँट को बजाने के लिए गति सीमा को निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक है। उचित लय अर्थात् गति का निर्धारण कर बाँट के सौंदर्य को प्रभावी ढंग से निर्मित किया जा सकता है। इसकी गति सीमा को वहीं तक बढ़ाया जाना उचित होगा जहाँ तक बाँट वादन करते हुए उसमें बाँयें की विशेषता को निभाया जा सके। बनारस में बाँयें के इस सौंदर्य को व्यक्त करने के लिए बड़े-बुजुर्ग इसे "बाँया घुलाना" कहकर सम्बोधित करते हैं। इस विशेषता को बाँये का विभिन्न अंग कह कर संबोधित किया जाता है।
- बाँट में सुर, चांट, थाप एवं अन्य बोलों के प्रयोग के साथ बाँयें का प्रयोग विशेष महत्व रखता है। बाँयें के विभिन्न अंग को जैसे- दाब-गाँस, गमक, घिस्सा, मीड़, ज़रब एवं आवश्यकतानुसार बाँयें की आंस को अत्यंत महत्व दिया जाता है। बनारस में बाँये का अत्याधिक महत्व दिखता है।
- बाँट किसी भी छंद एवं लयकारी का रूप निर्माण करने में बहुत उपयुक्त होता है। यह रचना किसी भी स्वरूप के अनुसार ढलने का विशिष्ट गुण रखती है। बाँट को साधारणतया ठाह, दुगुन करके क़ायदे की तरह भी सिर्फ़ विस्तार करते हुए तिहाई से समाप्त कर बजाया जा सकता है। साथ ही विभिन्न लयकरियों जैसे- बराबर, आड़, कुआड, बिआड़ इत्यादि का प्रयोग करते हुए सविस्तार वादन करना बाँट का वैशिष्ट्य है। बाँट के हर लय के दर्जे में उपज की तिहाई, रेला व रचनाओं को भी समावेश कर प्रस्तुति की परंपरा प्रचलन में है।

यह बंदिश कलाकार की कलाक्षमता का परिचय देती है क्योंकि इस रचना में रस के साथ-साथ अन्य साहित्यिक तत्वों का भी समावेश रहता है। इसमें प्रमुख रूप से प्रयुक्त होने वाले रस शांत, शृंगार, अद्भुत और वीर रस है। जिनका प्रयोग कलासाधक अपनी कल्पनाजन्यता पर करता है। कल्पना भी साहित्य का प्रमुख तत्व होता है। एक श्रेष्ठ संगीतकार के लिए कल्पना तत्व बहुत आवश्यक है। जिस कलाकार की कल्पना जितनी सुदृढ़ होगी वह उतना ही श्रेष्ठ कलाकार साबित होगा। विस्तारक्षम रचनाओं के अंतर्गत बनारस घराने में क़ायदों के साथ-साथ 'बाँट' का प्रमुखता से वादन किया जाता है। यह रचना सौंदर्यानुभूति की दृष्टि से बहुत उच्चकोटि की होती है। इनकी भाषा मृदुता लिए हुए होती है जो कोमल भावों का उद्दीपन कर ती है। मृदुल वादन से इसका सौन्दर्य और भी अधिक निखर जाता है। बाँट के सामर्थ्य एवं वैविध्य का परिचय स्वाभाविक रूप से परिलक्षित होता है जब बाँट के वादन में काशी के अनेक विभूतियों का महनीय योगदान एक ही बाँट को विशिष्ट ढंग एवं गुण के कारण अलग-अलग स्वरूप प्रदान करता है, जो एक ही रचना होने के बावजूद पृथक रचना का बोध कराता है।

निष्कर्ष

जिस प्रकार कायदा तबले की प्रथम सर्वाधिक विस्तारक्षम रचना है, वैसे ही सभी विस्तारशील रचनाओं में क़ायदे के ही समरूप 'बांट' नवीनतम एवं अंतिम सर्वाधिक विस्तारक्षम रचना है। कायदे के समान होकर भी बांट की संरचना, बोल, खाली-भरी, भाषा संयोजन, बांये के विविध तत्वों का प्रयोग, विस्तार, लय, छंद, क्रमानुसार दर्जे में विविध लयकारियों के साथ बांट में उपज की भिन्न-भिन्न मात्राओं से उठकर तिहाईयां बनना, बांट के

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

ऊपर रेला बजाना, रेले के साथ उस ज़मीन की टुकड़े इत्यादि रचनाओं का कलात्मक वादन वैशिष्ट्य, बांट को कायदे से पृथक एक दुर्लभ विस्तारशील रचना अभिव्यक्त करती है। बांट में निहित एक और सौंदर्यतत्व विद्यमान है, वह है बांट विस्तार होने के अंतिम चरण मे लग्गी-लड़ी का सुंदर रूप धारण कर लेना। यह रचना हर लय में विभिन्न भाव रस की उत्पत्ति करने में सक्षम रचना है। इस कारण एकल वादन के साथ-साथ तबला संगति में भी इसकी उपयोगिता में अत्यंत वृद्धि हो जाती है। कुछ कलाकारों में एक भ्रांति है कि बांट लग्गी से निर्मित रचना है जबकि वास्तव में बांट के बृहद स्वरूप का लग्गी एक अंश मात्र है। अतः लग्गी से बांट निर्मित है ना कहकर, बांट से लग्गी निर्मित रचना है ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति न होगी। बांट में चलन की भी आवश्यकता पूर्ति करने की पूर्ण क्षमता है। बांट बनारस घराने की प्रतिनिधि एवं बहुपयोगी रचना है।

संदर्भ सूची

गोडबोले, मधुकर गणेश; तबला शास्त्र; पृ. सं. 96
माईणकर, सुधीर; तबला वादन कला और शास्त्र; पृ. सं. 75
मिस्त्री, आबान ई.; तबले की बंदिशें; प्रथम संस्करण; इलाहाबाद: संगीत सदन, 2007; पृ. सं. 133
श्रीवास्तव, गिरीश चंद्र; तालकोश, द्वितीय संस्करण, इलाहाबाद : रूबी प्रकाशन, 2017; पृ. सं.152.
Gottlieb, Robert s.; The Major Traditions of North Indian Tabla Drumming; 1977; Pg. 155
मिश्र, छोटेलाल; ताल-प्रबंध; प्रथम संस्करण; नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स, 2006; पृ. सं. 94.
यादव, संध्या; वादन वैशिष्ट्य के आधार पर पूरब बाज के अंतर्गत आने वाले तीनों घरानों (लखनऊ, फर्रुखाबाद तथा बनारस) का विवेचनात्मक अध्ययन; शोध-प्रबंध, खैरागढ़ : इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय; 2022.